टिप्पणी

3

व्यावसायिक वातावरण

एक बार जब कोई व्यवसाय स्थापित हो जाता है, तो इसे सफलतापूर्वक चलाने और बनाए रखने के लिए वित्त की आवश्यकता होती है इसके लिए यह वित्तिय संस्थानों पर निर्भर करता है, जो मानदंड एवं संस्कृति इसको संचालित करती है इसके लिए वह समाज पर निर्भर करता है, बाजार की मांग के अनुसार आवश्यकताओं को समझने के लिए यह ग्राहकों पर निर्भर करता है, उसे अपने को नवीनतम विकास के साथ अपग्रेड करने के लिए विभिन्न तकनीकी पहलुओं की आवश्यकता होती है। इसे सरकारी नियमों व अन्य कानूनी पहलुओं को समझने की भी आवश्यकता होती है। इस प्रकार एक व्यवसाय के कई कारक और आयाम होते हैं जिससे व्यवसाय प्रभावित होता है। इन सब अवधारणाओं को जिसके अंतर्गत जाना जाता है वह व्यावसायिक वातावरण के अंतर्गत आती है।

इस व्यावसायिक वातावरण में आर्थिक पहलू, सामाजिक सांस्कृतिक पहलू, राजनीतिक ढांचा, कानूनी पहलू और तकनीकी पहलू आदि शामिल होते हैं। एक व्यवसाय को संचालित करने के लिए अब वातावरण को समझना अत्यंत महत्वपूर्ण है जिसमें यह काम करता क्योंकि यह हर पहलू को प्रभावित करता है, चाहे वह इसका स्वरूप हो, इसका स्थान हो, उत्पादों की कीमत हो, वितरण प्रणाली या कार्मिक नीतियां हों। इस अध्याय में, हम व्यावसायिक पर्यावरण की अवधारणा, इसकी प्रकृति, महत्व के साथ-साथ पर्यावरण के विभिन्न घटकों के विषय में जानेंगे। इसके अतिरिक्त, हम व्यापार की सामाजिक जिम्मेदारी और व्यापारिक नैतिकता की अवधारणा से भी परिचित होंगे।

अधिगम के प्रतिफल

इस पाठ को पढ़ने के बाद, शिक्षार्थी:

- व्यावसायिक वातावरण में व्यवसाय को प्रभावित करने वाले विभिन्न घटकों की पहचान करता है;

- एक व्यवसाय के व्यावसायिक वातावरण के घटकां में परिवर्तन को सूचीबद्ध करता है;
- बाह्य वातावरण में परिवर्तन के लिए व्यवसाय की भेद्यता का वर्णन करता है;
- सरकार द्वारा किए गए विभिन्न आर्थिक एवं प्रचारिक गतिविधियों की पहचान करता है; और
- व्यवसाय में सामाजिक रूप से नैतिक जिम्मेदारी के विकल्प पर विचार करता है।

3.1 व्यावसायिक वातावरण का अर्थ

जैसा कि पहले ही बताया गया है कि प्रत्येक व्यवसाय की सफलता उस वातावरण के अनुकूल होने पर निर्भर करती है जिसके अंदर वह कार्य करता है। उदाहरण के लिए, जब सरकार की नीतियों में बदलाव होता है तो व्यवसाय को नई नीतियों के अनुरूप स्वयं को ढालने के लिए आवश्यक बदलाव करने पड़ते हैं। इसी तरह तकनीकी बदलाव भी मौजूदा उत्पादों को अप्रचलित कर सकता है, जैसा कि हमने देखा हे कि कम्प्यूटर ने टाइपराइटरों का स्थान ले लिया है, रंगीन टेलीविजन ने सफेद टेलीविजन को फैशन से बाहर कर दिया। फिर से फैशन या ग्राहक की रुचि में बदलाव आने से बाजार की मांग में बदलाव आ सकता है, उदाहरण के लिए जींस की मांग ने अन्य पारंपरिक वस्त्रों की बिक्री को कम कर दिया है। ये सभी पहलू बाह्य कारक है जो व्यावसायिक नियंत्रण से परे हैं। इसलिए, व्यापार इकाइयों को जीवित रहने और व्यापार में सफल होने के लिए इन परिवर्तनों के अनुकूल स्वयं को बनाना होगा। इसलिए व्यावसायिक वातावरण के अंतर्गत इसकी अवधारणा एवं इसके विभिन्न घटकों की प्रकृति को स्पष्ट रूप से समझ लेना आवश्यक है।

'व्यावसायिक वातावरण' : शब्द उन बाह्य शक्तियों, कारकों और संस्थाओं को दर्शाता है जो कि व्यावसायिक नियंत्रण से परे हैं और जो एक व्यावसायिक उपक्रम की कार्य प्रणाली को प्रभावित करते हैं। इसके अंतर्गत ग्राहक, प्रतिस्पर्धी, आपूर्तिकर्ता, सरकार, सामाजिक, राजनीतिक, कानूनी और तकनीकी कारक आदि शामिल हैं। हालांकि इनमें से कुछ कारकों का व्यावसायिक कंपनियों पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ सकता है और कुछ अप्रत्यक्ष रूप से भी प्रभावित कर सकते हैं। इस प्रकार व्यापार परिवेश को समग्र वातावरण वु रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जिसका व्यवसाय के कामकाज पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। इसे बाह्य कारकों के समूह के रूप में भी परिभाषित किया जा सकता है, जैसे कि आर्थिक कारक, सामाजिक कारक, राजनीतिक कारक, कानूनी कारक, जनसांख्यिकी कारक एवं तकनीकी कारक आदि, जो प्रकृतिक नियंत्रण से परे हैं और एक कम्पनी के व्यावसायिक निर्णयों को प्रभावित करते हैं।

3.1.1 व्यावसायिक पर्यावरण की विशेषताएं

उपरोक्त चर्चा के आधार पर व्यावसायिक वातावरण की विशेषताओं को निम्नानुसार संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है-

(क) **सभी कारकों का योग** : व्यावसायिक वातावरण व्यावसायिक फर्म के लिए सभी बाह्य कारकों का कुल परिणाम है और यह उसके कामकाज को पूर्णतः प्रभावित करता है।

(ख) **सूक्ष्म एवं स्थूल कारक** : इसमें सूक्ष्म या विशिष्ट कारक शामिल होते हैं जो सीधे निवेशकों, प्रतिस्पर्धियों एवं ग्राहकों से जुड़े व्यवसाय को प्रभावित करते हैं। स्थूल या सामान्य कारकों में सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक कानूनी, सरकारी एवं तकनीकी पहलू शामिल है।

(ग) **परस्पर संबंधिता** : सभी स्थूल एवं सूक्ष्म कारक एक-दूसरे से परस्पर-निर्भर व परस्पर-संबंधी हैं।

(घ) **गतिशील** : व्यावसायिक वातावरण की प्रकृति गतिशील होती है, इससे तात्पर्य यह है कि यह परिवर्तनशील है।

(ङ) **अनिश्चितता** : व्यावसायिक वातावरण में बदलाव अप्रत्याशित होते हैं। भविष्य में होने वाली घटनाओं की सटीक प्रकृति एवं आर्थिक और सामाजिक वातावरण में बदलाव की भविष्यवाणी करना बहुत मुश्किल है।

(च) **जटिलता** : व्यावसायिक वातावरण स्थान से स्थान पर क्षेत्र से क्षेत्र में एवं देश से देश तक भिन्न-भिन्न होता है। भारत की राजनीतिक स्थिति पाकिस्तान से भिन्न है। भारत एवं चीन के लोगों की रुचि एवं मूल्यों में भी बहुत अंतर है।

3.1.2 व्यावसायिक वातावरण के महत्व

व्यापार और उसके पर्यावरण के मध्य एक सूक्ष्म व सतत सम्बन्ध है। यह आपसी सम्बन्ध व्यावसायिक फर्म को समझने और उसके संसाधनों का अधिक प्रभावी ढंग से उपयोग करने में सहायक होता है। जैसा कि ऊपर कहा गया है, व्यावसायिक वातावरण प्रकृति में बहुक्रियाशील, जटिल और गतिशील है और इसका व्यवसाय के अस्तित्व और विकास पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है। सामाजिक, राजनीतिक, कानूनी और आर्थिक वातावरण के बारे में अधिक विशिष्ट उचित समझ होना व्यापार को निम्नलिखित तरीकों से मदद करता है।

(क) **अवसरों एवं खतरों का निर्धारण** : व्यवसाय और उसके वातावरण के बीच पारस्परिक सम्बन्ध व्यापार को अवसरों एवं जोखिमों की पहचान करने में सहायक होते हैं। यह भविष्य की योजना और निर्णय लेने के माध्यम से चुनौतियों को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए व्यावसायिक उद्यमों की मदद करता है। उदाहरण के लिए, बाजारों में नई फर्मों के प्रवेश करने पर प्रतिस्पर्धा बढ़ जाती है।

टिप्पणी

(ख) विकास के लिए दिशा निर्देश : पर्यावरण के साथ सम्बन्धों से व्यापारिक कर्मों के लिए विकास के नए मार्ग खुलते हैं। वह व्यवसाय को अपनी गतिविधियों के विकास और विस्तार के लिए क्षेत्रों की पहचान करने में सक्षम बनाता है। उदाहरण के लिए, मोबाइल फोन के विकास की संभावनाओं को देखते हुए रिलायंस ने जियो को लांच किया।

(ग) निरंतर सीखना : पर्यावरण का विश्लेषण व्यावसायिक चुनौतियों से निपटने में प्रबंधकों के कार्य को सरल बनाता है। इससे प्रबंधक अपने व्यवसाय की सीमा में अनुमानित परिवर्तन के अनुसार अपने ज्ञान, समझ और कौशल को लगातार अद्यतन करने के लिए प्रेरित होते हैं। उदाहरण के लिए नई मोबाइल कंपनियों में रेडमी और एमआई ने एंड्रॉयड फोन में नई सुविधाओं को जोड़कर बाजार में अपने हिस्से का विस्तार किया है।

(घ) छवि का निर्माण : पर्यावरण की सही समझ, जिस व्यवसाय के साथ काम कर रहे हैं, उसके प्रति संवेदनशीलता दिखाकर उनकी छवि को बेहतर बनाने में व्यावसायिक संगठन की मदद करता है। उदाहरण के लिए, बिजली की कमी के अंतर्गत कई कंपनियों ने बिजली की अपनी आवश्यकता को पूरा करने के लिए अपने कारखानों में कैप्टिव पावर प्लांट (सीपीपी) की स्थापना की है।

(ङ) प्रतियोगिता का सामना करना : यह प्रक्रिया प्रतिद्वंद्वियों की योजनाओं का विश्लेषण करने और उसके अनुसार अपनी योजना तैयार करने में सहायक होती है। उदाहरण के लिए, पेप्सी एवं कोक के मूल्य निर्धारण की रणनीति।

(च) फर्म की ताकत एवं उसकी कमजोरी की पहचान : व्यावसायिक वातावरण तकनीकी एवं वैश्विक विकास के अंतर्गत अपनी निजी शक्तियों और कमजोरियों की पहचान करने में मदद करता है। उदाहरण के लिए सभी नवीनतम उपकरणों का विकास।

पाठगत प्रश्न 3.1

1. व्यावसायिक वातावरण को अपने शब्दों में परिभाषित करें-
2. निम्नांकित वाक्यों को गलत होने पर सुधारें:

   (क) व्यावसायिक वातावरण की प्रकृति स्थिर है।

   (ख) व्यावसायिक वातावरण में बाहरी कारकों के साथ-साथ व्यावसायिक फर्मों के आंतरिक कारक भी शामिल रहते हैं।

   (ग) व्यावसायिक वातावरण में होने वाले परिवर्तनों की आसानी से भविष्यवाणी की जा सकती है।

(घ) व्यावसायिक वातावरण फर्म के लिए अवसरों की पहचान करने में सहायक होता है।

3.2 व्यावसायिक वातावरण के प्रकार

व्यावसायिक वातावरण को अनियंत्रणीय बाह्य कारकों में सीमित करते हुए इसें-(अ) आर्थिक वातावरण एवं (ब) गैर-आर्थिक वातावरण में वर्गीकृत किया जा सकता है। आर्थिक वातावरण के अंतर्गत देश की आर्थिक स्थिति, आर्थिक नीतियां एवं आर्थिक प्रणाली शामिल हैं। गैर-आर्थिक वातावरण के अंतर्गत सामाजिक, राजनीतिक, कानूनी, तकनीकी, जनसांख्यिकीय और प्राकृतिक वातावरण शामिल है। इन सभी का फर्मों द्वारा अपनाई गई रणनीतियों पर असर पड़ता है और इन क्षेत्रों में किसी भी परिवर्तन का उनके संचालन पर दूरगामी प्रभाव पड़ने की संभावना है।

आइये हम व्यावसायिक वातावरण के क्षेत्र का संक्षेप में अध्ययन करें।

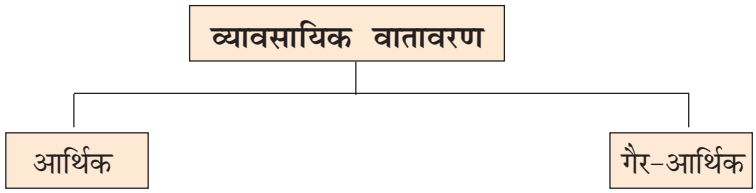

चित्र 3.1 व्यावसायिक वातावरण

3.2.2 आर्थिक वातावरण

आर्थिक वातावरण के अंतर्गत आर्थिक प्रणाली, अर्थव्यवस्था की प्रकृति और संरचना, विदेशी व्यापार एवं विदेशी निवेश नीतियों के प्रकार शामिल हैं। प्रत्येक व्यावसायिक उद्यम की उत्तर जीविता और सफलता उसके आर्थिक वातावरण पर पूरी तरह निर्भर करती है। आर्थिक वातावरण को प्रभावित करने वाले मुख्य कारक हैं।

(क) आर्थिक स्थिति : एक राष्ट्र की आर्थिक स्थिति को आर्थिक कारकों का पूरा समूह प्रभावित करता है जो व्यापारिक संगठनों एवं उसके संचालन पर बड़ा प्रभाव डालता है। इसमें सकल घरेलू उत्पाद, प्रति व्यक्ति आय, वस्तुओं और सेवाओं के बाजार, पूंजी की उपलब्धता, विदेशी मुद्रा भंडार, विदेशी व्यापार की वृद्धि, पूंजी बाजार की ताकत आदि शामिल हैं। ये सभी आर्थिक विकास की गति को सुधारने में सहायक होते हैं।

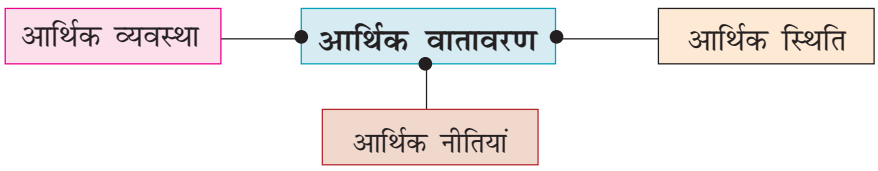

चित्र 3.2 आर्थिक वातावरण

टिप्पणी

(ख) आर्थिक नीतियां : सभी व्यावसायिक गतिविधियों और संचालन सरकार द्वारा समय-समय पर लागू आर्थिक नीतियों से प्रभावित होते हैं। कुछ महत्वपूर्ण आर्थिक नीतियां हैं- (i) औद्योगिक नीति, (ii) राजकोषीय नीति, (iii) मौद्रिक नीति, (iv) विदेशी निवेश नीति, (v) आयात-निर्यात नीति, (एकजिम नीति) सरकार इन नीतियों को समय-समय पर आर्थिक परिदृश्य एवं राजनीतिक उद्देश्यों में होने वाले घटनाक्रमों के आधार पर परिवर्तित करती रहती है। प्रत्येक व्यावसायिक फर्मों के नीतिगत ढांचे के भीतर इन नीतियों का पालन कड़ाई से करना पड़ता है और उसमें होने वाले परिवर्तन पर प्रतिक्रिया देनी पड़ती है।

(ग) आर्थिक व्यवस्था : विश्व की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से तीन प्रकार की आर्थिक प्रणाली द्वारा संचालित है, जैसे (i) पूंजीवादी अर्थव्यवस्था, (ii) समाजवादी अर्थव्यवस्था तथा (iii) मिश्रित अर्थव्यवस्था। भारत ने मिश्रित आर्थिक प्रणाली को अपनाया है जिसका तात्पर्य सार्वजनिक क्षेत्र और निजी क्षेत्र के सह-अस्तित्व से है।

महत्वपूर्ण आर्थिक नीतियां

(i) औद्योगिक नीति : सरकार की औद्योगिक नीति में उन सभी सिद्धांतों, नीतियों, नियमों विनियमों एवं प्रक्रियाओं को शामिल किया गया है जो देश के औद्योगिक उद्यमों को प्रत्यक्ष रूप से निर्देशित एवं नियंत्रित करती है और औद्योगिक विकास का एक पैटर्न निर्मित करती है।

(ii) राजकोषिय नीति : इसके अंतर्गत सार्वजनिक व्यय, कराधान और सार्वजनिक ऋण से सम्बन्धित सरकारी नीति शामिल है।

(iii) मौद्रिक नीति : इसमें उन सभी गतिविधियों व हस्तक्षेपों को शामिल किया जाता है जिसमें व्यापार को ऋण की सुचारू रूप से आपूर्ति और व्यापार एवं उद्योग को इन नीतियों के माध्यम से विकास के लिए प्रेरित किया जाता है।

(iv) विदेशी निवेश नीति : इस नीति का उद्देश्य औद्योगिक विकास को गति देने और आधुनिक प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में विदेशी निवेश को विनियमित करना है।

(v) आयात-निर्यात नीति (एक्जीभ नीति) : इस नीति का उद्देश्य निर्यात को बढ़ावा देना होता है तथा निर्यात एवं आयात के बीच की खाई को भरना होता है। इस नीति के माध्यम से सरकार विभिन्न करों/शुल्कों की घोषणा करती है। आज कल इस नीति का ध्यान बाधाओं एवं नियंत्रणों को हटाने या कस्टम करों को कम करने पर है।

3.2.2 गैर आर्थिक वातावरण

गैर-आर्थिक वातावरण के विभिन्न तत्व इस प्रकार हैं

(क) सामाजिक वातावरण : व्यवसाय के सामाजिक परिवेश में रीति-रिवाजों, परंपराओं,

मूल्यों, विश्वासों, गरीबी, अशिक्षा, जीवन प्रत्याशा दर आदि जैसे सामाजिक कारण शामिल हैं। सामाजिक संरचना और मूल्य व्यावसायिक फर्मों के कामकाज पर अधिक प्रभाव डालते हैं। उदाहरण के लिए, त्यौहारी मौसम के दौरान नए कपड़ों, मिठाइयों, फूलों, फलों आदि की मांग में वृद्धि होती है। साक्षरता दर में वृद्धि के कारण उपभोक्ता उत्पाद की गुणवत्ता के प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं। परिवार की संचरना में बदलाव के कारण एकल बच्चे की अवधारणा वाले एकल परिवार (न्यूक्लियर फैमिली) सामने आए हैं। इससे विभिन्न प्रकार के घरेलू सामानों की मांग बढ़ जाती है। यह बात ध्यान देने की है कि विभिन्न सामाजिक संरचनाओं और संस्कृति से सम्बन्धित लोगों की उपभोग की रुचि, ड्रेसिंग और जीवन शैली में काफी अंतर होता है।

(ख) राजनीतिक वातावरण : इसके अंतर्गत राजनीतिक व्यवस्था, सरकार की नीतियां और कारोबारी समुदाय और संघवाद के प्रति रुचि शामिल है। इन सभी पहलुओं का असर व्यापारिक फर्मों द्वारा अपनाई गई रणनीतियों को काफी हद तक प्रभावित करता है। यह विभिन्न समूहों और निवेशकों को विश्वास, शक्ति का संकेत भेजती है। इसके अतिरिक्त, राजनीतिक दल की विचारधारा व्यापारिक संगठन और उसके कार्यों को भी प्रभावित करती है। आप इस बात से अवगत होंगे कि कोका-कोला, कोल्ड ड्रिंक जो आज भी व्यापक रूप से प्रयुक्त होती है उसे सन् सत्तर के दशक के अंत में भारत में उसका परिचालन बंद करना पड़ा था। श्रम संघ की गतिविधियां भी व्यवसाय के संचालन को प्रभावित करती है। भारत के अधिकांश श्रमिक संघ विभिन्न राजनीतिक दलों से जुड़े हैं। हड़ताल, तालाबंदी और श्रम-विवाद आदि भी व्यावसायिक कार्यों पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। हालांकि, प्रतिस्पर्धा कारोबारी परिवेश के साथ ट्रेड यूनियन्स अब बड़ी परिपक्वता दिखा रहे हैं और श्रमिकों के प्रबंधन में भागीदारी के माध्यम से व्यापार संगठन और उसके संचालन में सकारात्मक योगदान देने लगे हैं।

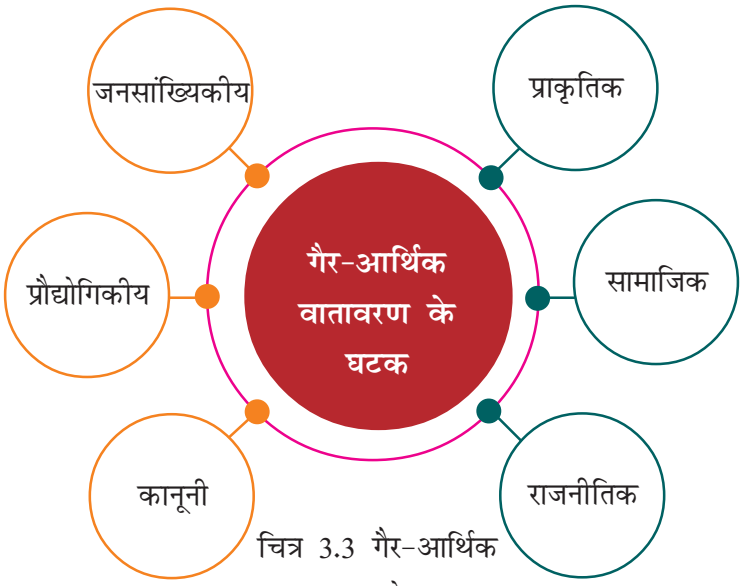

चित्र 3.3 गैर-आर्थिक वातावरण के घटक

(ग) कानूनी वातावरण : यह कानूनों व नियमों को संदर्भित करता है जो व्यापारिक संगठनों को और उनके कार्यों को प्रभावित करते हैं। हर व्यापारिक संगठन को कानून के ढांचे के अनुसार चलाना होता है और उसका पालन करना होता है। व्यापार एवं उद्यमों से संबंधित महत्वपूर्ण कानून है-

(i) कंपनी अधिनियम, 2013 एवं कम्पनी अधिनियम, 1956

(ii) विदेशी मुद्रा प्रबंध अधिनियम, 1999

(iii) कारखाना अधिनियम, 1948

(iv) औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1972

(v) ग्रेच्यूटी भुगतान अधिनियम, 1972

(vi) औद्योगिक (विकास एवं नियमन) अधिनियम, 1951

(vii) खाद्य मिलावट रोकथाम अधिनियम, 1954 जिसे खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम 2002 द्वारा रद्द किया गया।

(viii) आवश्यक वस्तु अधिनियम, 2002

(ix) तोल एवं माप मानक अधिनियम, 1976 जिसे न्यायिक मेट्रोलॉजी अधिनियम 2009 द्वारा रद्द किया गया

(x) एकाधिकार एवं प्रतिबंधित व्यापार व्यवहार अधिनियम, 1969 जिसे प्रतिस्पर्धा अधिनियम 2002 द्वारा बदल दिया गया।

(xi) व्यापार चिन्ह अधिनियम, 1999

(xii) भारतीय मानक ब्यूरो अधिनियम, 2016

(xiii) उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 2019

(xiv) पर्यावरण संरक्षण अधिनियम 1986

(घ) तकनीकी वातावरण : तकनीकी पर्यावरण में माल एवं सेवाओं के उत्पादन और इसके वितरण के लिए अपनाई जाने वाली विधियां, तकनीकी एवं दृष्टिकोण शामिल होते हैं। विभिन्न देशों के विभिन्न तकनीकी वातावरण उत्पादों के डिजाइन को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका और कई अन्य देशों में विद्युत उपकरण 110 वोल्ट के लिए डिजाइन किए गए हैं। लेकिन जब ये भारत में देखें तो वे 220 वोल्ट के बने हुए हैं। आधुनिक प्रतिस्पर्धा के युग में, तकनीकी परिवर्तन बहुत तेजी से हो रहा है। इंटरनेट, वर्ल्ड वाइड वेब एवं एड्रांइड फोनने तकनीकी जगत में एक क्रांति ला दी है। इसलिए बाजार में स्वयं को स्थापित करने और आगे बढ़ने के लिए एक व्यवसाय को समय-समय पर इन तकनीकी परिवर्तनों को अपनाना आवश्यक है। यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि उत्पादों एवं सेवाओं में सुधार तथा नवाचार के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान अधिकांश बड़े औद्योगिक संगठनों में एक नियमित गतिविधि है।

(ङ) जनसांख्यिकी वातावरण : इसके अंतर्गत जनसंख्या के आकार, घनत्व, वितरण एवं विकास की दर का अध्ययन किया जाता है। इन सभी कारकों का विभिन्न वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग पर सीधा प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, एक देश जहां जनसंख्या की दर अधिक है और बच्चे उस जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा है तो वहां शिशु उत्पादों की मांग ज्यादा होगी। इसी तरह शहरों एवं कस्बों के लोगों की मांग एवं ग्रामीण इलाकों के लोगों की मांग में भी अंतर होगा। जनसंख्या की वृद्धि के कारण वहां कुशल श्रम की आसान उपलब्धता रहती है। ये व्यावसायिक उद्यमों को उत्पादन के लिए श्रम की गहन तकनीक का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इसके अलावा, कुछ क्षेत्रों में कुशल श्रमिकों की उपलब्धता फर्मों को ऐसे क्षेत्रों में अपनी इकाइयां स्थापित करने के लिए प्रेरित करती है। उदाहरण के लिए अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, जर्मनी, यूके से व्यावसायिक इकाइयां कुशल जनशक्ति की आसान उपलब्धता के कारण भारत की ओर रुख कर रही है। इस प्रकार एक फर्म जो जनसांख्यिकी मोर्चे पर होने वाले बदलाव पर नजर रखती है और उनका सही तरीके से अध्ययन करती है कई प्रकार के अवसर मिलते रहते हैं।

(च) प्राकृतिक वातावरण : प्राकृतिक वातावरण के तहत भौगोलिक एव परिस्थितिक कारक शामिल है जो व्यवसाय के संचालन को प्रभावित करने में सक्षम हैं। इन कारकों में प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धि, मौसम और जलवायु की स्थिति, स्थानीय कारक आदि शामिल है। व्यवसाय प्राकृतिक वातावरण की प्रकृति से अधिक प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए चीनी के कारखाने केवल उन्हीं स्थानों पर स्थापित किए जाते हैं जहां गन्ने की फसल ज्यादा होती है। कच्चे माल के स्रोतों के पास निर्माण इकाई को स्थापित करना हमेशा बेहतर माना जाता है। इसके अलावा सरकारी नीतियां उस स्थान के संतुलन, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण आदि को बनाए रखने के लिए व्यापार क्षेत्र पर अतिरिक्त जिम्मेदारी भी डालती है।

पाठगत प्रश्न-3.2

1. आयात-निर्यात नीति का क्या अर्थ है?
2. निम्नलिखित स्थिति में गैर-आर्थिक पर्यावरण के विभिन्न प्रकारों की पहचान करें:

   (क) उत्सवों के मौसम के दौरान नए कपड़े की मांग बढ़ जाती है।

   (ख) कम्प्यूटर ने टाइपराइटर को पुराना कर दिया है।

   (ग) कोका-कोला को अब भारतीय बाजार में स्वतंत्र रूप से बेचा जा रहा है।

   (घ) चीनी के कारखानों को वहीं स्थापित किया जा रहा है जहां गन्ना को प्रचुर मात्रा में उगाया जाता है।

(ङ) किसी विशेष क्षेत्र में कुशल श्रम की उपलब्धता।

3.3 भारतीय अर्थ व्यवस्था में नवीन विकास

भारत में व्यापार की आर्थिक स्थिति मुख्यत: सरकार की आर्थिक नीतियों में बदलाव के कारण तेजी से बदल रही है। आजादी के समय, भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित थी और उसका औद्योगिक आधार कमजोर था। औद्योगिक विकास को गति प्रदान करने के लिए एवं विभिन्न आर्थिक समस्याओं के हल करने के लिए सरकार ने कई कदम उठाए जैसे कि श्रेणियों के उद्योगों पर राज्य का स्वामित्व आर्थिक नियोजन, निजी क्षेत्र की भूमिका में कमी आदि। सरकार ने निजी क्षेत्र के उद्यमों के कामकाज पर कई नियंत्रक उपायों को अपनाया। इन सभी प्रयासों के परिणामस्वरूप एक मिश्रित प्रतिक्रिया मिली। पूंजीगत वस्तु क्षेत्र और बुनियादी ढांचे के विकास में शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद एवं प्रति व्यक्ति आय में भी वृद्धि हुई। लेकिन औद्योगिक विकास की दर कम होती गई। परिणामस्वरूप मुद्रा स्फीति में वृद्धि हुई और सरकार को अस्सी के दशक में एक गंभीर विदेशी मुद्रा के संकट का सामना करना पड़ा परिणामस्वरूप 1991 में, भारत सरकार ने आर्थिक नीतियों में क्रांतिकारी परिवर्तन किया। इस नीति ने अधिकांश मामलों में औद्योगिक लाइसेंसींग को समाप्त कर दिया, अधिकांश सार्वजनिक क्षेत्रीय के उद्योगों में विनिवेश किया गया और अर्थव्यवस्था को काफी हद तक खोल दिया गया। भारत में विदेशी पूंजी निवेश को प्राप्त करने के लिए विदेशी निवेश प्रोत्साहन बोर्ड की स्थापना की गई। आइये अब हम इन तीन प्रमुख विकास पर चर्चा करें:

(a) उदारीकरण (b) निजीकरण (c) वैश्वीकरण

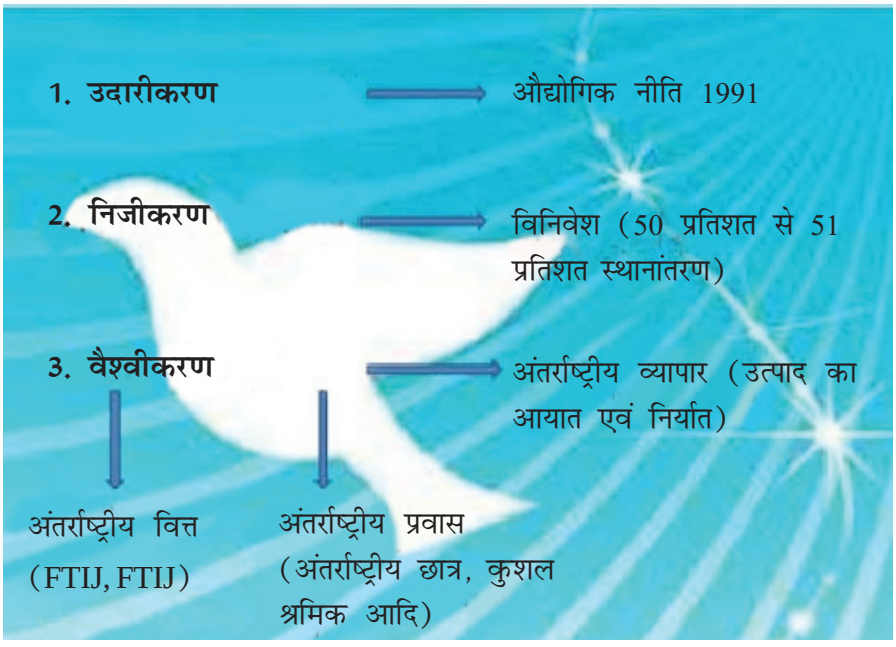

चित्र 3.4 एलपीजी

(क) उदारीकरण : उदारीकरण से तात्पर्य व्यावसायिक उद्यामों के सुचारू कामकाज पर अनावश्यक नियंत्रणों और प्रतिबंधों को समाप्त कर देने की प्रक्रिया है। इसमें शामिलहैं:

(i) अधिकांश उद्योगों में औद्योगिक लाइसेंसिंग आवश्यकताओं को समाप्त करना;

(ii) व्यावसायिक गतिविधियों के पैमाने तय करने में स्वतंत्रता;

(iii) वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें तय करने की स्वतंत्रता;

(iv) आयात एवं निर्यात की प्रक्रिया को सरल बनाना;

(v) कर की दरों में कमी; एवं

(vi) भारत में विदेशी पूंजी एवं प्रौद्योगिकी को आकर्षित करने के लिए सरल नीतियों को लागू करना।

इस उदारीकरण की नीति को अपनाने से भारतीय अर्थव्यवस्था बाहरी दुनिया के लिए खुल गई है और बड़े पैमाने पर विश्व से संवाद करना शुरू कर दिया है। इसका परिणाम यह हुआ कि विदेशी व्यापारिक संगठनों को भारत में आसानी से प्रवेश का मार्ग खुल गया है। इस प्रक्रिया ने भविष्य में एक कड़ी प्रतिस्पर्धा एवं दक्षता की ओर संकेत किया है। आखिरकार इस उदारीकरण ने हमें उच्च वृद्धि दर, प्रतिस्पर्धी दर, स्वस्थ और समृद्ध शेयर बाजार, उच्च विदेशी मुद्रा रिजर्व, मुद्रा स्फीति की कम दर, रुपये की मजबूत स्थिति, बेहतर औद्योगिक संबंध आदि पर वस्तुओं की सहज उपलब्धता को भी प्राप्त करने में मदद की है।

(ख) निजीकरण : निजीकरण से तात्पर्य अधिकांश गतिविधियों में निजी क्षेत्रों को शामिल करके सार्वजनिक क्षेत्रों की भूमिका को कम करना है। 1991 में घोषित नीतिगत सुधारो के कारण, सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार दरअसल रुक गया और उदारीकृत अवधि में निजी क्षेत्र से तेजी से वृद्धि दर्ज की है।

निजीकरण के मूल बिन्दुओं में शामिल हैं :

(i) सार्वजनिक क्षेत्र में आरक्षित उद्योगों की संख्या में 17 से 8 तक की कमी (बाद में कम होकर तीन तक हो जाना) और आरक्षित क्षेत्र में चयनित प्रतिस्पर्धा की शुरूआत होना।

(ii) संसाधनों तक पहुंचने और व्यवसाय में स्वामित्व में आम जनता एवं श्रमिकों की व्यापक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए चयनित सार्वजनिक क्षेत्र के आद्योगिक उद्यमों के शेयरों का विनिवेश होना।

(iii) एमओयू (समझौता ज्ञापन) प्रणाली के माध्यम से, प्रदर्शन में सुधार करना जिसके द्वारा प्रबंधन को अधिक स्वायत्तता दी जानी है लेकिन निर्दिष्ट परिणाम के लिए भी वह जवाबदेह है।

टिप्पणी

भारत में इन उठाए गए कदमों के परिणामस्वरूप, उदारीकरण के बाद के चरण ने भारत में निजी क्षेत्र के कारोबार में भी व्यापक विस्तार किया है। आप इन तथ्यों से उनके विस्तार का अंदाजा लगा सकते हैं कि शीर्ष 500 निजी क्षेत्र की कंपनियों में कार्यरत कुल पूंजी रुपये में वृद्धि हुई है। 1992-1993 में 1,39,806 करोड़ रुपये एवं 1994-95 में रु 2,34,751 करोड़ रुपये (केवल दो वर्षों में 68 प्रतिशत की वृद्धि हुई है) तक बढ़ी।

(ग) **वैश्वीकरण :** 'वैश्वीकरण' से तात्पर्य है विश्व अर्थव्यवस्थ के साथ किसी देश की अर्थव्यवस्था को एकीकृत करना। इसका अर्थ यह है कि राष्ट्रीय सीमाओं के पार वस्तुओं एवं सेवाओं, पूंजी, प्रौद्योगिकी और श्रम का स्वतंत्र रूप से आदान-प्रदान होना। वैश्वीकरण के इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सरकार ने विभिन्न उपायों को अपनाया है जैसे कि कस्टम करों में कमी, परिमाणात्मक प्रतिबंधों को हटाना, निर्यात एवं आयात के कोटे को कम करना, विदेशी निवेश की सुविधा देना और विदेशी प्रौद्योगिकी को प्रोत्साहित करना। इन उपायों से विकास की उच्च दर, रोजगार क्षमता में वृद्धि एवं क्षेत्रीय स्तर पर आने वाली असमानताओं में कमी की उम्मीद की जा सकती है।

3.3.1 व्यापार एवं उद्योगों पर सरकार की नीति में होने वाले परिवर्तन का प्रभाव

1. **तेजी से बदलता तकनीकी वातावरण :** नई आर्थिक नीति की शुरूआत के बाद कंपनियों पर विश्व स्तरीय प्रौद्योगिकी को ग्रहण करने के लिए दबाव पड़ा। इसका कारण प्रतिस्पर्धा में वृद्धि है।

2. **अधिक मांग वाले उपभोक्ता :** सरकारी नीति लागू होने से पहले उपभोक्ताओं द्वारा बिना पूछताछ के सामान एवं सेवाओं की खरीद की गई। लेकिन आजकल उत्पादों का उत्पादन ग्राहकों की मांगों को ध्यान में रखकर ही किया जाता है। अब ग्राहकों ने भी उच्च गुणवत्ता वाले सामान और सेवाओं को खरीदना शुरू कर दिया है।

3. **बढ़ती प्रतिस्पर्धा :** आज भारतीय कंपनियों को न केवल आंतरिक बाजार से ही बल्कि एमएनसी से भी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ता है। यदि कोई कंपनी इन प्रतियोगिताओं का सामना नहीं कर पाती है तो उन्हें बाजार छोड़ना पड़ जाता है।

4. **परिवर्तन की आवश्यकता :** सरकारी नीति के लागू होने के पहले व्यवसायों में स्थिरता थी किसी भी नीति का उपयोग लंबे समय तक जारी रखने के लिए किय जाता था। लेकिन इन दिनों इन व्यावसायिक वातावरण में तेजी से परिवर्तन हो रहा है जिससे व्यापार या उद्यम को समय-समय पर अपनी नीतियों को संशोधित करना पड़ रहा है।

5. **मानव संसाधनों के विकास की आवश्यकता :** सरकारी नीति में बदलाव से पहले, भारतीय कंपनियों को अपर्याप्त प्रशिक्षित कर्मियों द्वारा प्रबंधित किया जाता था। नए बाजार की स्थिति में अत्यधिक कुशल एवं सक्षम मानव संसाधनों की मांग बढ़ी। इसलिए भारतीय कंपनियों द्वारा अपने मानव कौशल में वृद्धि के लिए प्रशिक्षण दिए जाने लगे।

3.3.2 वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी)

'एक देश एक कर' की नीति को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने 1 जुलाई, 2017 से वस्तु एवं सेवा कर (जीससटी) लागू कर दिया। यह वस्तुओं एवं सेवाओं की आपूर्ति पर लगाया गया एक अप्रत्यक्ष कर है और इसने भारत में पहले से लागू कई अप्रत्यक्ष करों के नियम को बदल दिया। विकास के लिए राजस्व का स्रोत होने के अलावा यह कर भी राज्य को अपने करदाताओं के प्रति जवाबदेह बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक प्रभावी कराधान की प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि सार्वजनिक धन का उपयोग स्वत विकास के प्रभावी सामाजिक उद्देश्यों को पूरा करने में पूर्णत: कार्यरत है।

जीएसटी से व्यापार एवं अर्थव्यवस्था को निम्नलिखित लाभ होते हैं:

1. यह कर के ऊपर कर को समाप्त करता है; करों पर लगाने वाले कर को हटाता है;
2. यह तकनीकी सरल एवं ऑनलाइन प्रक्रियाओं से प्रेरित है;
3. यह वस्तुओं एवं सेवाओं की लागत में कमी करता है;
4. कराधान की प्रक्रिया को गति मिली है;
5. संलग्न अनुपालनों की संख्या इससे काफी कम हो गई है;
6. असंगठित क्षेत्र को अब विनियमित किया जा सकता है।

3.3.3 मेक इन इंडिया

भारत सरकार द्वारा राष्ट्र निर्माण की पहल के तहत सितंबर, 2014 में 'मेक इन इंडिया' का शुभारंभ किया गया था। इसका एकमात्र उद्देश्य निवेश की सुविधा देना, नवाचार को प्रोत्साहित करना, कौशल विकास को बढ़ावा देना और दुनिया भर के विभिन्न वाणिज्यिक क्षेत्रों को भारत में अपने उत्पादों को बनाने के लिए इंजीनियरों को अवसर देना था जिससे वे इच्छानुसार कहीं भी अपने उत्पाद को बेचने के लिए आमंत्रित करना। इस नए राष्ट्रीय कार्यक्रम का नेतृत्व औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग (डीआईपीपी), वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया जाता है। 'मेक इन इंडिया' का उद्देश्य मौजूदा भारतीय प्रतिभा का उपयोग करना, अतिरिक्त रोजगार के अवसर पैदा करना और द्वितीय एवं तृतीय क्षेत्र को सशक्त बनाना है।

चित्र 3.5 मेक इन इंडिया

'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम का केन्द्र बिन्दु 25 क्षेत्रों पर है। इसमें शामिल है: ऑटोमोबाइल, विमानन, रसायन, आईटी एवं बीपीएम, दवा, निर्माण, रक्षा विनिर्माण, विद्युत मशीनरी, खाद्य प्रसंस्करण, कपड़ा एवं गार्मेंट्स, बंदरगाह, चमड़ा, मीडिया एवं मनोरंजन कल्याण, खान, पर्यटन एवं आतिथ्य, रेलवे, ऑटोमोबाइल कल्याण, नवीकरणीय ऊर्जा, जैव-प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, तापीय ऊर्जा, सड़कें एवं राजमार्ग एवं इलेक्ट्रॉनिक व्यवस्था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य, अनावश्यक नियमों एवं कानूनों को समाप्त करना व्यापार में सुविधा देना, भारत की रैंक में सुधार करना, नौकरशाही प्रक्रिया को आसान बनाना एवं सरकार को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी एवं जवाबदेह बनाना है।

'मेक इन इंडिया' के उद्देश्य:

(i) नौकरी के अवसरों में विस्तार करना;

(ii) व्यापार करने में सरलता;

(iii) प्रौद्योगिकी का उन्नयन;

(iv) अनावश्यक कानूनों एवं प्रतिबंधों को समाप्त करना;

(v) वैश्विक बाजार में भारत की श्रेणी में सुधार करना;

(vi) नौकरशाही प्रक्रियाओं को आसान बनाना;

(vii) सरकार को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी एवं जवाबदेह बनाना;

(viii) भारत की आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देना।

3.3.4 डिजीटल इंडिया

जुलाई, 2015 में भारत सरकार द्वारा एक नया अभियान शुरू किया गया जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों को तीव्र इंटरनेट से सम्बद्ध करना एवं डिजीटल साक्षरता में सुधार करना था। सभी नागरिकों को इलेक्ट्रॉनिक रूप से सरकार की सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग द्वारा डिजीटल इंडिया की शुरूआत की गई। डिजीटल रूप से

सशक्त समाज को स्वास्थ्य, शिक्षा, वित्तिय सेवाएं सूचना एवं प्रौद्योगिकी तक पहुंच प्रदान करके अपने लोगों के आर्थिक एवं सामाजिक पहलुओं में सुधार किया जा सकता है। डिजीटल इंडिया के तीन प्रमुख खटक हैं:

(अ) डिजीटल आधारिक संरचना का सृजन (ब) सरकारी सेवाओं को डिजीटल रूप से वितरित करना एवं (स) डिजीटल साक्षरता को बढ़ावा देना।

डिजीटल इंडिया के लाभ:

(i) ई-शिक्षा, ई-स्वास्थ्य, ई-साइन, डिजी लॉकर जैसी नई सेवाओं की शुरूआत;

(ii) लोगों का सशक्तिकरण;

(iii) सूचना की जानकारी सरलता से होना;

(iv) उच्च गुणवत्ता वाली सेवाओं में विकास;

(v) कागजी कार्यवाही एवं औपचारिकता में कमी;

(vi) आइटी क्षेत्र में रोजगार का सृजन;

(vii) उद्योगों को बढ़ावा देना

पाठगत प्रश्न-3.3

1. वैश्वीकरण से क्या तात्पर्य है?
2. उदारीकरण के लिए 'उ' निजीकरण के लिए 'नि' तथा वैश्वीकरण के लिए 'व' लिखें:
   (क) वस्तुओं और सेवाओं की कीमतें तय करने में स्वतंत्रता ☐
   (ख) सार्वजनिक क्षेत्र के औद्योगिक उपक्रमों के शेयरों का विनिवेश ☐
   (ग) विक्रय कर की दरों में कमी ☐
   (घ) सीमा शुल्क में कमी ☐
   (ङ) सार्वनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित उद्योगों की संख्या में कमी ☐
3. किस उद्देश्य से 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम शुरू किया गया था?

3.4 व्यवसाय की सामाजिक जिम्मेदारी

प्रत्येक व्यवसाय या उद्यम समाज का अभिन्न अंग होता है। यह समाज के विकास और आगे बढ़ने के लिए दुर्लभ संसाधनों का प्रयोग करता है। इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि व्यवसाय की कोई भी गतिविधि समाज के दीर्घकालिक हितों की क्षति न पहुंचाएं। हालांकि, यह देखा गया है कि व्यावसायिक अभ्यास के दौरान कुछ सामाजिक अनुपयोगी पहलु होते हैं जैसे, पर्यावरण को प्रदूषित करता, करों का भुगतान न करना, मिलावटी उत्पादों का निर्माण एवं

टिप्पणी

उसकी बिक्री करना तथा भ्रामक विज्ञापन देना आदि। इससे एक उद्यम की सामाजिक जिम्मेदारी की अवधारणा विकसित हुई है, जिससे व्यवसाय के मालिकों और प्रबंधक समुदाय और उसके ग्राहकों, श्रमिकों आदि के प्रति उनकी जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक किया जाता है।

3.4.1 सामाजिक जिम्मेदारी की अवधारणा

व्यवसाय की सामाजिक जिम्मेदारी से तात्पर्य है कि वह ऐसे तरीके से कार्य करे जिससे समाज के हितों की रक्षा हो सके। इसे कारपोरेट सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में भी जाना जाता है जिसके अंतर्गत वह सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं पर्यावरण के बिन्दुओं के प्रति रुचि रखते हुए नैतिक रूप से अपने व्यवसाय का संचालन करने वाली संस्थाओं का प्रतिनिधित्व करता है। व्यवसाय की सामाजिक जिम्मेदारी कानूनी जिम्मेदारी से भिन्न है। किसी व्यवसाय की उचित व्यवहार दिया जाना चाहिए। अन्यथा वे एकत्रित होकर बाध्यता कानून के भय के कारण हो सकती है, लेकिन सामाजिक दायित्व समाज की आवश्यकता को पूरा करने के लिए उसके हित में कदम उठाने से व्यावसायिक गतिविधियों को मदद मिलेगी। सामाजिक दायित्वों को पूरा करने से व्यवसाय के चारों तरफ एक ऐसा वातावरण निर्मित होता है जिसमें उसकी स्वयं की सफलता निहित होती है। भारत सरकार एवं बड़ी कंपनियों को हर साल अपने लाभ का कम से कम दो प्रतिशत सीएसआर पर खर्च करने की आवश्यकता होती है।

निम्नलिखित कारणों के कारण सामाजिक जिम्मेदारी महत्वपूर्ण हैं:

1. **स्व-हित :** समाज की मांगों को पूरा करने वाला व्यापार लंबे समय तक सफल हो सकता है। जिन लोगों के पास अच्छी शिक्षा, पर्यावरण का ज्ञान और उचित अवसर हैं वे अच्छे कर्मचारी एवं ग्राहक के रूप में व्यवसाय के करीब हो सकते हैं।
2. **सामाजिक शक्ति का संतुलन :** किसी भी व्यवसाय के निर्णय और उसकी गतिविधियां उपभोक्ताओं, कर्मचारियों, पर्यावरण और उसके समुदाय को प्रभावित कर सकती है। इसलिए इसकी सामाजिक शक्ति होती है। यदि सामाजिक शक्ति या जिम्मेदारी संतुलित नहीं है तो व्यवसाय उपभोक्ताओं, कर्मचारियों, पर्यावरण और समुदाय के हितों के विरुद्ध अपनी शक्ति का दुरुपयोग कर सकता है।
3. **समाज का निर्माण :** व्यवसाय समाज का निर्माण करता है क्योंकि यह समाज द्वारा प्रदान किए गए संसाधनों का उपयोग करता है। इसलिए इसे संसाधनों का उपयोग लोगों के हित में करना चाहिए। एक सफल व्यवसाय एक खुश एवं संतुष्ट समुदाय और कर्मचारियों के निर्माण में सहायक हो सकता है।
4. **सामाजिक जागृति :** आज के समय में उपभोक्तगण विभिन्न उत्पादों उसके मूल्यों उत्पादों की गुणवत्ता एवं उत्पाद की आपूर्ति करने वाली प्रतिष्ठित कंपनियों के विषय में पूर्णत: जागरूक है। इसलिए उन्हें व्यवसाय द्वारा उचित व्यवहार दिया जाना चाहिए।

टिप्पणी

अन्यथा एकत्रित होकर उपभोक्ता संघ जैसे संगठनोंको संगठित कर सकते हैं। यह व्यवसाय को सामाजिक दायित्वों को निभाने के लिए मजबूर करेगा।

5. **सार्वजनिक छवि :** यदि कोई व्यवसाय सामाजिक जिम्मेदारियों को पूरा करता है तो उसकी सार्वजनिक छवि में सुधार होगा। इससे जनता की संस्था के प्रति विश्वसनीयता बढ़ेगी। अन्यथा व्यापार एवं समाज के बीच टकराव पैदा होगा।

6. **नैतिक औचित्य :** प्रत्येक व्यावसायिक संगठन समाज के मानव संसाधन भौतिक संसाधन एवं समाज की पूंजी का उपयोग करता है। व्यावसायिक कंपनियों द्वारा उस समाज के सड़क मार्ग, बिजली और पानी का प्रयोग किया जाता है। व्यावसायिक इकाइयों के उत्पाद समाज को बेचे जाते हैं। इसलिए यह व्यवसाय की नैतिक जिम्मेदारी होती है।

3.4.2 विभिन्न रुचि समूहों के प्रति जिम्मेदारियां

यह ध्यान देने की आवश्यकता है कि व्यवसाय का प्रबंधन करने वालों की जिम्मेदारी केवल उनके मालिकों तक ही सीमित नहीं हो सकती है। उन्हें बड़े पैमाने पर वहां काम करने वाले श्रमिकों, उपभोक्ताओं, सरकार एवं समुदाय तथा जनता जैसे अन्य हित धारकों की उम्मीदों को भी ध्यान में रखना आवश्यक है। आइये अब इन समूहों के प्रति व्यवसाय की जो जिम्मेदारी होती है उसे देखें-

(क) अंशधारियों अथवा स्वामियों के प्रति जिम्मेदारी : शेयरधारक या मालिक वो हैं जो व्यवसाय में अपना पैसा लगाते हैं। उन्हें अपने निवेश पर उचित लाभ दिया जाना चाहिए। आप जानते हैं कि कम्पनियों के मामले मे यह लाभांश के रूप में होता है। यह सुनिश्चित करना होगा कि लाभांश की दर में कमाई के साथ-साथ जोखिम भी शामिल है। लाभांश के अतिरिक्त शेयर धारकों को शेयरों के मूल्य में वृद्धि की भी उम्मीद रहती है। यह मुख्य रूप से कंपनियों के निष्पादन पर निर्भर होता है।

मालिकों या निवेशकों के प्रति जिम्मेदारी

1. निवेश की सुरक्षा सुनिश्चित करना।
2. वित्तिय पहलुओं पर नियमित, सही और पर्याप्त जानकारी प्रदान करना।
3. उचित एवं नियमित लाभांश प्रदान करना।
4. पूंजी की मूल्य वृद्धि को सुनिश्चित करना।
5. व्यापार की संपत्ति की रक्षा करना।

(ख) कर्मचारियों के प्रति जिम्मेदारी : एक व्यावसायिक उपक्रम को बाजार में प्रचलित दरों में और काम की प्रकृति के आधार पर श्रमिकों को उचित मजदूरी या वेतन देना चाहिए। सुरक्षा, चिकित्सा, कैंटीन, आवास, अवकाश और सेवानिवृत्ति से लाभ आदि के सम्बन्ध

टिप्पणी

में सुविधा अच्छी होनी चाहिए। उन्हें व्यावसायिक आय के आधार पर बोनस की उचित राशि का भुगतान भी किया जाना चाहिए। प्रबंधन में उनकी भागीदारी के लिए एक प्रावधान भी होना चाहिए क्योंकि कोई भी संगठन कर्मचारियों के बिना जीवित नहीं रह सकता है। कुशल मस्तिस्क, प्रयास, प्रतिमा और कर्मचारियों की विशेषज्ञता ही किसी व्यवसाय को सफल बनाने में सक्षम है। इसलिए कर्मचारियों के प्रति व्यावसाय की जिम्मेदारी इस प्रकार है:

1. कर्मचारियों को उनके काम के अनुसार उचित वेतन देना
2. श्रमिकों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए कार्य स्थिति को बेहतर बनाना
3. आवास, चिकित्सा, देखभाल, मनोरंजन आदि जैसी सेवाएं प्रदान करना।
4. अपनेपन की भावना विकसित करना।
5. व्यवसाय में बेहतर मानवीय संबंध बनाकर श्रमिकों के सहयोग को जीतना।

(ग) उपभोक्ताओं के प्रति जिम्मेदारी : एक व्यावसायिक उद्यम को उचित मूल्य पर उपभोक्ताओंको गुणवत्तापूर्ण सामान एवं सेवाओं की आपूर्ति करनी चाहिए। इसमें मिलावट, खराब पैकेजिंग, भ्रामक एवं संदेहपूर्ण विज्ञापन से बचना चाहिए। और ग्राहकों की शिकायतों व कष्टों के लिए उचित व्यवस्था होनी चाहिए। व्यवसाय द्वारा उत्पादित उत्पादों का उपयोग उपभोक्ताओं द्वारा ही किया जाता है।

उपभोक्ताओ के प्रति व्यवसाय की निम्नलिखित जिम्मेदारियां हैं:

1. माल/सेवाओं की नियमित आपूर्ति होना।
2. उचित मूल्य पर सामान उपलब्ध कराना
3. विभिन्न वर्गों के उपभोक्ताओ की जरूरतों को पूरा करने के लिए सामान उपलब्ध कराना।
4. स्तरीय किस्म का सामान उपलब्धि कराना।
5. यह सुनिश्चित करना कि दिए गए विज्ञापन सत्य है।
6. शीघ्र एवं सतत सेवा उपलब्धि कराना।

(घ) सरकार के प्रति जिम्मेदारी : व्यावसायिक उपक्रम को व्यवसाय स्थापित करते समय सरकारके दिशा निर्देशों का पालन करना चाहिए। इसे व्यवसाय को वैधानिक ढंग से चलाना चाहिए, करों का भुगतान ईमानदारी से समय पर करना चाहिए। इसे भ्रष्ट व्यवहारों या अवैध गतिविधियों में शामिल नहीं होना चाहिए। व्यवसाय की सरकार के प्रति जिम्मेदारियां निम्नवत हैं:

1. राष्ट्र के नियमों का पालन करना।

2. करों का भुगतान समय पर ईमानदारी से करना।
3. सरकारी कर्मचारियों को भ्रष्ट करने से दूर रहना।
4. आर्थिक शक्ति और एकाधिकार के केन्द्रीकरण की प्रवृत्तियों को हतोत्साहित करना।
5. विदेशी व्यापार में न्यायसंगत व्यवहार अपनाना।

(ङ) समुदाय के प्रति जिम्मेदारी : हर व्यवसाय हमारे समुदाय का हिस्सा होता है। इसलिए इसे समुदाय सामान्य कल्याण में योगदान करना चाहिए। यह सामाजिक और सांस्कृतिक और मूल्यों को संरक्षित और बढ़ावा देना चाहिए, रोजगार के अवसर उत्पन्न करने चाहिए और समाज के कमजोर वर्गों के विकास में योगदान करना चाहिए। यह समुदाय के भौतिक और परिस्थितिक पर्यावरण की रक्षा के लिए हर एक कदम उठाना चाहिए। इसे सार्वजनिक स्वास्थ्य की देखभाल, खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसे सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में योगदान देना चाहिए जनता के प्रति एक व्यवसाय की मुख्य जिम्मेदारी इस प्रकार है:

1. पर्यावरण को प्रदूषण से बचाना।
2. रोजगार के बेहतर अवसर प्रदान करना।
3. सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षण प्रदान करना।
4. समाज के कमजोर वर्ग जैसे विकलांग व्यक्तियों, विधवाओं एवं अनुसूचित जनजातियों की मदद करना।
5. राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना।

विभिन्न समूहों के प्रति व्यपार की सामाजिक जिम्मेदारी के महत्व को देखते हुए यह बेहतर होगा यदि कंपनी अधिनियम के अंतर्गत कंपनियों की वार्षिक रिपोर्ट में इन सामाजिक गतिविधियों को शामिल करें। हालांकि कुछ बड़ी कंपनियां स्वैच्छिक रूप से अपनी वार्षिक रिपोर्ट में अपने सामाजिक निष्पादन को भी नियमित रूप से शामिल कर रही हैं। उनमें से प्रमुख सीमेंट कार्पोरेशन ऑफ इंडिया, इंडियन ऑयल कार्पोरेशन, टाटा स्टील, एशियन पैंट्स और आईटीसी हैं। इन रिपोर्टों से पता चलता है कि कंपनियां पर्यावरण के अनुकूल और सामुदायिक विकास में अपनी भूमिका के प्रति जागरूक हो रही हैं।

3.4.3 व्यापार एवं पर्यावरण संरक्षण

पौधों और जानवरों का स्वास्थ्य पर्यावरण की गुणवत्ता पर निर्भर करता है जिसमें वे रहते हैं। फास्ट-फूड केन्द्रों और यातायात का तेजी से औद्योगिककरण की भागीदारी से पर्यावरण को काफी नुकसान पहुंचा है। अपने कर्मचारियों के लिए बड़ी संख्या में कारखानों और अपार्टमेंट

टिप्पणी

के निर्माण के कारण वन और वन्य जीव तेजी से घट रहे हैं। इसलिए ध्वनि प्रदूषण और जल प्रदूषण में तेजी से वृद्धि हो रही है। सरकार द्वारा इन प्रदूषणों को रोकने के लिए कानून बनाए गए हैं। केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड स्थापित किए गए हैं।

पर्यावरण प्रदूषण के कारण : पर्यावरण प्रदूषण बढ़ने के निम्नलिखित कारण हैं।

1. **वायु प्रदूषण :** वायु प्रदूषण के अनेक कारण हैं जो वायु की गुणवत्ता को कम कर रहे हैं। ऑटोमोबाइल द्वारा उत्सर्जित कार्बन मोनोऑक्साइड वायु प्रदूषण में योगदान देता है।

2. **जल प्रदूषण :** कारखानों से निकलने वाला रासायनिक कचरा हर देश के जल स्रोतों को प्रदूषित कर रहा है। फूलों व अन्य सामग्रियों से भरी प्लास्टिक की थैलियों, प्लास्टिक शीशीयों को फैंकने से हमारी नदियां, नहरें और झील प्रदूषित हो रहे हैं।

3. **भूमि प्रदूषण :** कृषि में कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग ने हमारी दैवीय भूमि को नुकसान पहुंचाया है। लोग हर रोज खरीददारी के लिए जाते हैं और उन्हें प्लास्टिक बैग में खरीदने की आदत होती है। इन प्लास्टिक थैलियों को इधर-उधर फैंककर लोग भूमि के प्रदूषण का कारण बनते हैं।

4. **ध्वनि प्रदूषण :** फैक्ट्री चलाना भी ध्वनि प्रदूषण का एक स्रोत है। ऑटोमोबाइल भी ध्वनि प्रदूषण का कारण है। ध्वनि प्रदूषण से मानसिक विकार, सुनने की क्षमता में कमी, दिल आदि की बीमारियां हो सकती है।

प्रदूषण नियंत्रण की आवश्यकता

निम्नलिखित कारणों से आज प्रदूषण नियंत्रण की आवश्यकता है।

1. सुरक्षा के खतरों को कम करना और जीवन की सुरक्षा सुनिश्चित करना।
2. दायित्व के जोखिम को कम करने के लिए लोगों को मुआवजा देना।
3. जनता के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए।
4. जल प्रदूषण (जो मछलियों एवं अन्य जल संयंत्रों को प्रभावित करना), मानव स्वास्थ्य के लिए खतरा जैसे- सांस लेने में कठिनाई, आंखों में जलन आदि को कम करने के लिए।
5. भूमि और मशीनों की सफाई की लागतों को बचाने के लिए।

3.5 व्यवसाय नैतिकता

व्यावसायिक नैतिकता से तात्पर्य उन व्यावसायि प्रथाओ से है जो समाज के दृष्टिकोण से वांछनीय है अर्थात वे नैतिक सिद्धांत जिनका पालन व्यवसाय के द्वारा किया जाना चाहिए। कारोबारी सदाचार यह निर्धारित करते हैं कि व्यापार करते समय क्या सही हो रहा है, क्या

गलत। नैतिकता से हमारा तात्पर्य व्यावसायिक प्रथाओं से है जो सामाजिक दृष्टिकोण में वांछनीय है। व्यावसायिक नैतिकता के कुछ उदाहरण है:

1. ग्राहक से उचित मूल्य वसूलना।
2. वस्तुओं को नापने में उचित वजन का उपयोग करना।
3. सरकार को सही और शीघ्रता से करों का भुगतान करना।
4. जनता के लिए सुरक्षित उत्पादों की आपूर्ति को सुनिश्चित करना।
5. श्रमिकों से उचित व्यवहार करना।
6. अनुचित व्यापार जैसे भ्रष्टाचार, कालाबाजारी और जमाखोरी में लिप्त न होना

3.5.1 कारोबारी सदाचार

कारोबारी सदाचार के तत्व इस प्रकार है:

1. कारोबारी सदाचार फर्मों एवं कंपनियों पर लगाया गया स्वयं का अनुशासन है।
2. यह नैतिकता व्यवसाय को ईमानदार और जिम्मेदार बनाती है।
3. उसका उदद्देश्य ग्राहकों, कर्मचारियों, आपूर्तिकर्त्ताओं आदि के प्रति उचित व्यवहार रखना है।
4. कारोबारी सदाचार कानून के साथ सह-अस्तित्व में है जो जीवन के संचालन की पूर्णता में सहायक है।
5. कारोबारी सदाचार के अंतर्गत वे सभी तत्व शामिल किए गए हैं जो समाज के दृष्टिकोण से वांछनीय हैं।

पाठगत प्रश्न-3.4

1. कारोबारी सदाचार का अर्थ बताइये।
2. उस समूह की पहचान करें जिसके प्रति व्यवसाय उत्तरदायी है।
   (क) जब कोई संगठन समय पर करों का भुगतान करता है?
   (ख) जब कम्पनी अच्छी गुणवत्ता वाले उत्पाद बनाती है और उसे उचित मूल्य पर बेचती है।
   (ग) जब कम्पनी किसी विशेष क्षेत्र में वहां की जनता के लिए स्पोर्ट मीट का आयोजन करती है।
   (घ) जब कंपनी उच्च दर पर लाभांश की घोषणा करती है।

टिप्पणी

(ङ) जब संगठन स्टॉक के सदस्यों को उचित चिकित्सा सुविधा प्रदान करता है।

(च) सही विकल्प पर निशान लगाएं।

(i) निम्नलिखित में से व्यवसायाओं में नैतिकता की पहचान करें:

(अ) श्रमिकों का शोषण

(ब) मिलावटी खाद्य पदार्थ बेचना

(स) उपभोक्ताओं के साथ ईमानदारी का व्यवहार

(द) नकली माल की बिक्री

(ii) निम्नलिखित में से कौन-सा एक नैतिक अभ्यास नहीं है:

(अ) व्यापार द्वारा करों का शीघ्र भुगतान

(ब) सही माप के साथ उत्पाद बेचना

(स) कालाबाजारी

(द) श्रमिकों को उचित मजदूरी प्रदान करना।

पाठान्त प्रश्न

अति लघुउत्तरीय प्रश्न

1. व्यवसाय परिवेश की कोई दो विशेषताएं बताइए।
2. व्यापार परिवेश के विभिन्न प्रकारों के बारे में बताए।
3. व्यापार के गैर-आर्थिक परिवेश के विभिन्न तत्वों की सूची बनाइए।
4. भारतीय अर्थ व्यवस्था के उदारीकरण के किन्हीं दो प्रभावों को बताएं।
5. 'नैतिकता' शब्द से क्या अभिप्राय है?
6. व्यवसाय की सामाजिक जिम्मेदारी से आपका क्या अभिप्राय है?
7. व्यावसायिक नैतिकता से आप क्या समझते हैं?
8. उपभोक्ताओं के प्रति व्यवसाय की कोई दो जिम्मेदारियां बताइये।
9. पर्यावरणीय प्रदूषण के किन्हीं दो कारणों का उल्लेख करें।
10. व्यापारिक नैतिकता के किसी भी दो तत्वों को बतायें।
11. व्यापारिक नैतिकता के दो उदाहरण दें।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. व्यवसाय का जनसांख्यिकीय वातावरण व्यावसायिक गतिविधियों को कैसे प्रभावित करता है?
2. भारत सरकार ने अपने उदारीकरण की प्रक्रिया के रूप में क्या भूमिका निभाई है?
3. व्यावसायिक उपक्रमों के सामान्य कामकाज में राजनीतिक वातावरण के प्रभाव की व्याख्या करें।
4. एक व्यावसायिक उपक्रमों को सामाजिक रूप से जिम्मेदार क्यों होना चाहिए?
5. भारतीय अर्थव्यवस्था में वैश्वीकरण के क्या प्रभाव हैं?
6. सामाजिक जिम्मेदारी की अवधारणा को संक्षेप में समझाएं।
7. कर्मचारियों के प्रति व्यवसाय की जिम्मेदारियों को बताएं।
8. सामाजिक उत्तरदायित्व के पक्ष में कोई चार तर्क प्रस्तुत कीजिए।
9. व्यावसायिक नैतिकता शब्द से आप क्या समझते हैं?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. व्यापारिक फर्मों के लिए व्यावसायिक वातावरण के महत्व का वर्णन करें।
2. व्यावसायिक वातावरण की किन्हीं दो गैर आर्थिक विशेषताओं की व्याख्या करें।
3. व्यवसाय की सामाजिक जिम्मेदारी से क्या अभिप्राय है? समुदाय के प्रति व्यवसाय की जिम्मेदारियों को बताएं।
4. व्यापार के आर्थिक वातावरण के विषय में संक्षेप में बताइये।
5. विभिन्न समूहों के प्रति व्यवसाय की सामाजिक जिम्मेदारी को समझाइये।
6. निवेशकों, उपभोक्ताओं एवं कर्मचारियों के प्रति एक व्यवसाय की क्या जिम्मेदारियां हैं?
7. सामाजिक जिम्मेदारी से आपका क्या अभिप्राय है? व्यवसाय की सामाजिक जिम्मेदारी के पक्ष में कुछ बिन्दुओं की व्याख्या करें?
8. व्यावसायिक नैतिकता से आपका क्या अभिप्राय है? तीन उदाहरण प्रस्तुत करें। व्यावसायिक नैतिकता के तत्व कौन-कौन से हैं? संक्षेप में बताएं।
9. ''व्यवसाय के वातावरण का ज्ञान व्यावसायियों को व्यवसाय के खतरों और अवसरों को समझने में मदद करता है।'' इस कथन के प्रकाश में व्यवसाय के वातावरण के महत्व को समझाएं जो व्यवसायियों को भविष्य के लिए योजना तैयार करने में मदद करता है।

10. ''एक व्यवसाय को श्रमिकों, उपभोक्ताओं, सरकार और समुदाय जैसे विभिन्न हितधारकों की अपेक्षाओं को ध्यान में रखना पड़ता है।'' व्यापार की सामाजिक जिम्मेदारियों के स्पष्टीकरण के साथ इस कथन पर टिप्पणी करें।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1

2. (क) व्यावसायिक वातावरण की प्रकृति गतिशील है।

(ख) व्यावसायिक वातावरण में व्यावसायिक फर्म के बाहरी कारक शामिल हैं।

(ग) व्यावसायिक वातावरण में परिवर्तनों का पूर्वानुमान सम्भव नहीं है।

(घ) सही है

3.2

1. आयात निर्यात नीति हमारे देश के आयात और निर्यात को नियंत्रित करती है। इस नीति के माध्यम से सरकार वस्तुओं एवं सेवाओं के आयात पर करों का फैसला करती है।

2. (क) सामाजिक वातावरण

(ख) तकनीकी वातावरण

(ग) राजनीतिक वातावरण

(घ) प्राकृतिक वातावरण

(ङ) जनसांख्यिकी वातावरण

3.3

1. वैश्वीकरण का अर्थ है विश्व अर्थ व्यवस्था वाले देश की अर्थव्यवस्था को एकीकृत करना। इससे तात्पर्य है राष्ट्रीय सीमाओं के पार वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी एवं प्रौद्योगिकी एवं श्रम का आदान-प्रदान करना।

2. (अ) उ (ब) नि (स) उ (द) वै (य) नि

3.4

1. व्यावसायिक नैतिकता का अर्थ है, समाज एवं व्यावसायिक क्रियाओं के बीच पास्परिक सम्बन्ध/व्यवसाय के उद्देश्य, कार्य, तकनीकें एवं व्यवहार समाज द्वारा निर्धारित मानकों के अनुरूप होने चाहिएं।

2. (क) सरकार के प्रति जिम्मेदारी

(ख) उपभोक्ता के प्रति जिम्मेदारी

(ग) समुदाय के प्रति जिम्मेदारी

(घ) स्वामी/अंशधारियों के प्रति जिम्मेदारी

(ङ) कर्मचारियों के प्रति जिम्मेदारी

3. (i) स (ii) स

करें और सीखें

1. अपने इलाके के स्थान जैसे बाजार, स्थान, डाकघर, बैंक या अन्य स्थानों पर जाएं और सूचना प्रौद्योगिकी के कारणों से हुए परिवर्तनों की सूचि बनाएं।
2. अपने क्षेत्र में उपलब्ध प्रचुर मात्रा में उपलब्ध कच्चे माल का पता लगाएं। इसके आधार पर कितनी व्यावसायिक इकाइयां स्थापित की गई हैं? एक रिपोर्ट तैयार करें।

रोल प्ले

सतीश ग्रामीण इलाके में रहता है। एक बार वह पास के शहर गया था। उसने वहां एक बहुत बड़ा एवं सुव्यवस्थित पार्क देखा। पार्क के अंदर एक छोटे से बोर्ड पर लिखा था- 'इस पार्क का रख-रखाव के सीएस लिमिटेड द्वारा किया जाता है।' उसने याद करने की कोशिश की इससे पहले उसने यह नाम कहां पढ़ा है। उसे याद आया कि गांव का धर्मार्थ अस्पताल भी केसीएस लिमिटेड द्वारा ही चलाया जाता है। वह जिज्ञासा से भर गया। उसने इस सबके बारे में और ज्यादा जानने का फैसला किया। एक दिन वह अपने दोस्त के पिता श्री के मोहन से मिला।

सतीश : अंकल, शुभ प्रभात।

के मोहन : शुभ प्रभात, सतीश कैसे हो।

सतीश : बढ़िया हूं! और आप कैसे हैं?

के मोहन : बहुत बढ़िया! बेटा कैसे आना हुआ?

सतीश : अंकल! यदि मुझे ठीक तरह से याद है तो आप शायद केसीएस लिमिटेड कंपनी में कार्यरत हैं। ठीक है न।

के मोहन : तुम सही कह रहे हो! मैं उसमें जनरल मैनेजर (प्रशासन) के पद पर कार्यरत हूं। लेकिन क्यों?

सतीश : अंकल! आज मैं एक पार्क में गया था, मैंने देखा केसीएस कंपनी उस पार्क का रख-रखाव करती है और उसी कंपनी ने हमारे गांव के अस्पताल की जिम्मेदारी भी ले रखी है। ठीक है, परंतु एक कंपनी को अपने नियमित गतिविधियों अपना ध्यान हटाकर ऐसी

गतिविधि में क्यों लिप्त होना चाहिए जिससे केवल उसका खर्च बढ़ता है।

के. मोहन : खैर, इन सभी को कंपनी द्वारा समुदाय के प्रति जिम्मेदारी के रूप में लिया जाता है और इसे कंपनी की सामाजिक जिम्मेदारी कहा जाता है।

सतीश : सामाजिक जिम्मेदारी? ये क्या है?

(फिर श्री के मोहन ने सतीश को एक कंपनी की समाज के प्रति होने वाली जिम्मेदारी के विषय में बताया) अब आपको अपने मित्र के लिए और स्वयं के लिए एक भूमिका बनाकर इस वार्तालाप को जारी रखने की आवश्यकता है।

2. राहुल एक ट्रेड यूनियन नेता है। उसने अपने अनुयाइयों के साथ एक बैठक में चर्चा करते हुए पूछा कि कार्य के दौरान भिन्न-भिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

कर्मचारीगण : कर्मचारियों ने राहुल को काम के घंटे, कार्य स्थल की बुरी स्थिति आवास, मनोरंजन आदि की समस्याओं के बारे में बताया।

राहुल : कोई दिक्कत नहीं है। मैं प्रबंधक से बात करूंगा और उन्हें श्रमिकों, समाज और सरकार के प्रति एक व्यवसाय की सामाजिक जिम्मेदारी के बारे में समझाऊंगा।

राहुल एवं कारखाने के प्रबंधक के बीच की कल्पना करते हुए कृपया सामाजिक जिम्मेदारी की चर्चा को जारी रखें।

आपने क्या सीखा

महत्व
लोगों की जीवन स्तर में सुधार
रोजगारोत्पत्ति
वृहद् स्तर पर उत्पादन में सुविधा
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा
गुणवत्तापूर्ण उत्पादों के उत्पादन में सहायता करना
आगे बढ़ने की अपार संभावना
सामाजिक हित में बढ़ावा
अंतर्राष्ट्रीय शांति और सद्भाव को बचाए रखना
विज्ञान और तकनीक का विकास
उद्देश्य
आर्थिक उद्देश्य
सामाजिक उद्देश्य
मानवीय उद्देश्य
राष्ट्रीय उद्देश्य
वैश्विक उद्देश्य
वैश्विक उद्देश्य
व्यवसाय में लाभ की भूमिका
भविष्य में वृद्धि और विस्तार
प्रोत्साहन
प्रतिष्ठा
लक्ष्यों की प्राप्ति
दक्षता के मानक
व्यवसायिक आजीविका के साधन

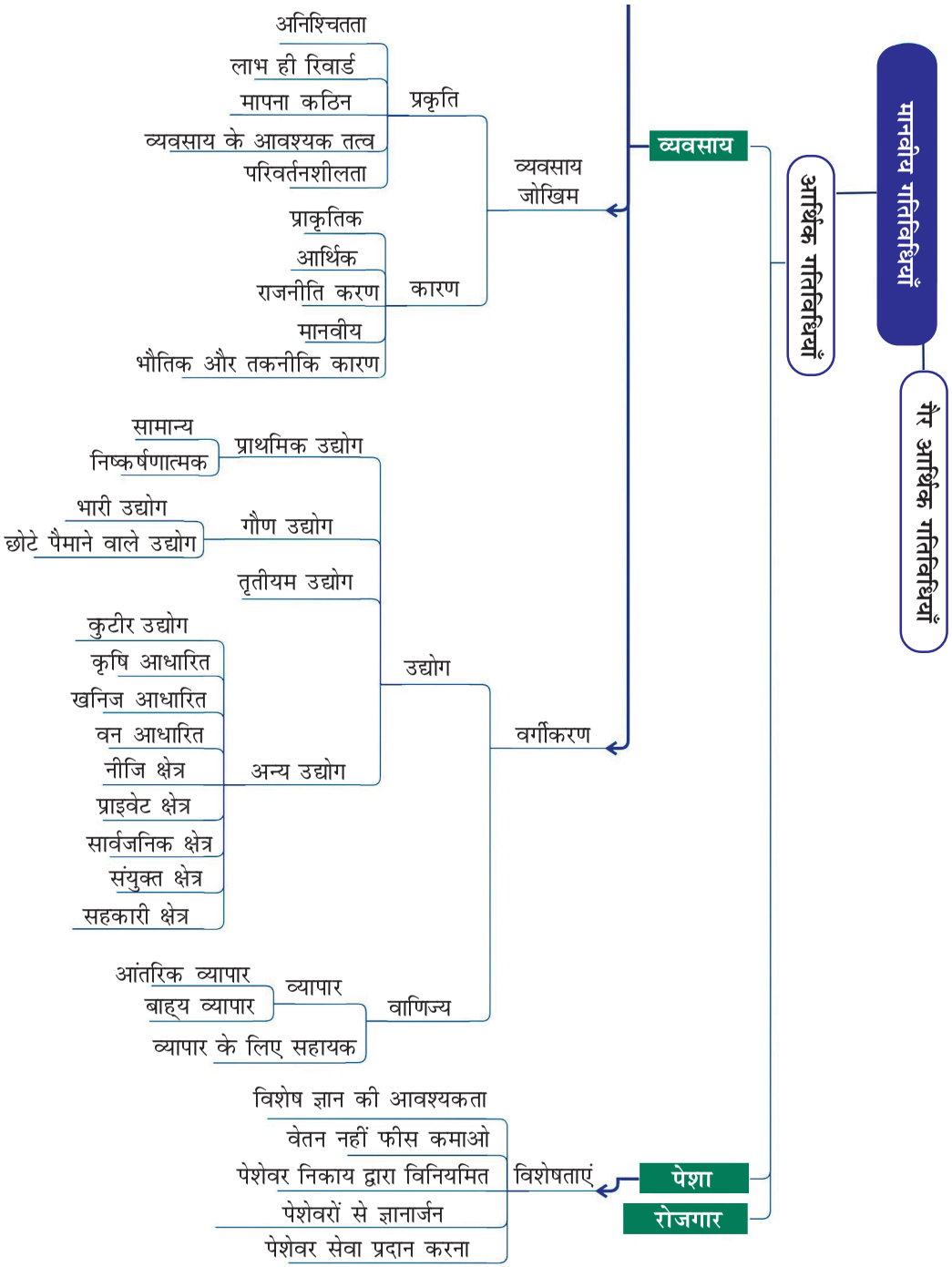
मानवीय गतिविधियाँ
आर्थिक गतिविधियाँ
गैर आर्थिक गतिविधियाँ
व्यवसाय
व्यवसाय जोखिम
प्रकृति
अनिश्चितता
लाभ ही रिवार्ड
मापना कठिन
व्यवसाय के आवश्यक तत्व
परिवर्तनशीलता
कारण
प्राकृतिक
आर्थिक
राजनीति करण
मानवीय
भौतिक और तकनीकि कारण
वर्गीकरण
उद्योग
प्राथमिक उद्योग
सामान्य
निष्कर्षणात्मक
गौण उद्योग
भारी उद्योग
छोटे पैमाने वाले उद्योग
अन्य उद्योग
तृतीयम उद्योग
कुटीर उद्योग
कृषि आधारित
खनिज आधारित
वन आधारित
नीजि क्षेत्र
प्राइवेट क्षेत्र
सार्वजनिक क्षेत्र
संयुक्त क्षेत्र
सहकारी क्षेत्र
वाणिज्य
व्यापार
आंतरिक व्यापार
बाह्य व्यापार
व्यापार के लिए सहायक
पेशा
विशेषताएं
विशेष ज्ञान की आवश्यकता
वेतन नहीं फीस कमाओ
पेशेवर निकाय द्वारा विनियमित
पेशेवरों से ज्ञानार्जन
पेशेवर सेवा प्रदान करना
रोजगार